संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हो। मेरे सभी पाठकों को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे शक्तिशाली और सबसे अतुल्य नाम से एक बहुत ही खुश, समृद्ध और धन्य नव वर्ष की शुभकामनाएं देती हूँ। हमारे अच्छे प्रभु यीशु आपकी रक्षा करें और इस पूरे वर्ष में आप और आपके सभी निकट और प्रियजनों का मार्गदर्शन करें।

यिर्मयाह 32:27 ''मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ; क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है?''

हमारा प्रभु प्रेम, करुणा और दया से भरपूर है। हमारे प्रभु ने पानी को दाखरस में बदल दिया; हमारे प्रभु ने समुद्र और तूफानों को शांत किया; हमारे परमेश्वर चेलों की मदद करने के लिए आधी रात को समुद्र पर चले। पाँच रोटी और दो मछलियों के साथ, प्रभु ने पाँच हज़ार लोगों को खिलाया। फिर, सात रोटी और कुछ छोटी मछलियाँ लेकर, परमेश्वर ने चार हज़ार लोगों को खिलाया। क्या ये चमत्कार और शक्तिशाली आश्चर्य कार्य नहीं हैं जो प्रभु करते है? क्या कुछ भी प्रभु के लिए मुश्किल है?

व्यवस्थाविवरण 33:3 ''वह निश्चय देश देश के लोगों से प्रेम करता है; उसके सब पवित्र लोग तेरे हाथ में हैं: वे तेरे पांवों के पास बैठे रहते हैं, एक एक तेरे वचनों से लाभ उठाता है।''

एक तरफ प्रभु अद्भुत चमत्कार कर रहे हैं और दूसरी तरफ, वह अपने शिष्यों को चमत्कार करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। प्रेरितों के काम 19:11 ''और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ के अनोखे काम दिखाता था।'' मेरे प्रियजनों, अब यह आपके विस्मय कार्य और चमत्कार करने का समय है। प्रभु आपको उपचार और चमत्कार का उपहार देना चाहते है। लूका 10:19 ''देखो, मैने तुम्हे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।''

पुराने नियम में, फिरौन के आगे मूसा ने जो दस चमत्कार किए थे, वे न्याय के चमत्कार थे। फिर भी दस विपत्तियों के बाद भी, फिरौन ने अपने दिल को कठोर कर लिया, जिसके कारण उसने अपने पहले बेटे को खो दिया।

जब मूसा की बहन मरियम ने उसके खिलाफ बात की, तो प्रभु का भयानक फैसला उस पर आया और तुरंत, उसे कुष्ठ रोग हो गया। गिनती 12: 8–10 ''8 उससे मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने सामने और प्रत्यक्ष हो कर बातें करता हूं; और वह यहोवा का स्वरूप निहारने पाता है। सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे? 9 तब यहोवा का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया; 10 तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई। और हारून ने मरियम की ओर दृष्टि की, और देखा, कि वह कोढ़िन हो गई है।'' वह जो आपको छूता है, वह उनकी आंख की पुतली को छूता है, क्या प्रभु आपको छूने वालों पर भयानक निर्णय नहीं लाएगा?

यीशु जो एक अंजीर के पेड़ से फल की इच्छा में आये थे, उन्हें केवल पत्ते मिले और फल नहीं मिले। प्रभु का दंड पेड़ पर तुरंत आया, और वह पेड़ जड़ों से सूख गया। मरकुस 11:20 ''फिर भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक सूखा हुआ देखा।''

आज भी, कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ में है, इसलिए हर पेड़ जो अच्छा फल नहीं देगा उसे काट दिया जायेगा और आग में डाला जायेगा। इसलिए हमेशा प्रभु के लिए फलते–फूलते रहो और फलदायी बनो। जो प्रभु हमें यह अधिकार देते है, वह सर्वशक्तिमान है। उसके पास स्वर्ग और पृथ्वी पर सारी शक्ति है। वह जो आप में है वह इस दुनिया में है उससे अधिक बढ़कर है।इसलिए मेरे प्यारे प्रियजनों, यह वर्ष आप सभी के लिए जीत का महान वर्ष होने दो जो प्रभु के वादों पर विश्वास करते हैं और मांगते हैं।

आप सभी हमारे पराक्रमी परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की छाया में रहें!

जब तक हम फिर से मिलें,

पास्टर सरोजा म.

परमेश्वर प्राथनाओं का जवाब देते है!

भजन संहिता 28:6 ''यहोवा धन्य है; क्योंकि उसने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है।'' यह 'विजय की आवाज़' है, यह 'साक्षी की आवाज' भी है। दाऊद प्रभु का धन्यवाद कर रहे है क्योंकि प्रभु ने उसकी प्रार्थना सुन ली है। हमारा प्रभु ही एक परमेश्वर है जो प्रार्थना सुनते है और उसका उत्तर भी देते है। भजन संहिता 65: 2 कहता है ''हे प्रार्थना के सुनने वाले! सब प्राणी तेरे ही पास आएंगे।'' परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुनते है और उसका उत्तर देते है। उनमें से अधिकांश जो अपनी गवाही देते हैं, पहले अपनी गवाही कहते हैं और फिर प्रभु को धन्यवाद देते हैं। लेकिन दाऊद, उसके बारे में गवाही देने से पहले ही प्रभु को धन्यवाद देते है। भजन संहिता 28: 6–9 ''6 यहोवा धन्य है; क्योंकि उसने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुना है। 7 यहोवा मेरा बल और मेरी ढ़ाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूंगा। 8 यहोवा उनका बल है, वह अपने अभिषिक्त के लिये उद्धार का दृढ़ गढ़ है। 9 हे यहोवा अपनी प्रजा का उद्धार कर, और अपने निज भाग के लोगों को आशीष दे; और उनकी चरवाही कर और सदैव उन्हें सम्भाले रह।'' कई भजन संहिता लिखित दाऊद की प्रार्थना जैसे हैं। जैसे की भजन संहिता 17, 86, 142 सभी 'दाऊद की प्रार्थना' हैं। हां, वही प्रभु जिसने दाऊद की प्रार्थना का जवाब दिया है, वह हमारी प्रार्थना का भी जवाब देंगे। इस प्रकार, हमें प्रभु में विश्वास रखना चाहिए। दाऊद के जीवन में एक समय था जब वह पूरी तरह से टूट गया और बिखर गया। लेकिन जब तक उसके भीतर ताकत की एक आखिरी बूंद थी, तब तक उसके हर दुःख और दर्द में दाऊद ने ज़ोर से प्रभु की स्तुति की। आइए हम पढ़ें 1 शमूएल 30: 8 ''और दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं इस दल का पीछा करूं? क्या उसको जा पकडूंगा? उसने उस से कहा, पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा;'' प्रभु ने दाऊद की प्रार्थना सुनी क्योंकि उसने कभी भी प्रार्थना बीच में नहीं छोड़ा। दाऊद ने हमेशा आखिर तक उसका पीछा किया जो भी उसने खोया था और उसे पाया। आइए हम यह भी पढ़े 1 शमूएल 30: 19 ''वरन उनके क्या छोटे, क्या बड़े,क्या बेटे, क्या बेटियां, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उस में से कोई वस्तु न रही जो उन को न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया।'' इस

प्रकार, हमें हमेशा यह विश्वास रखना चाहिए कि परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं को सुनते है। पवित्र बाइबल में, हमने पढ़ा कि प्रभु ने अपने जीवन की विभिन्न स्थितियों में कई लोगों की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया है।

75 साल की उम्र में, परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को एक बच्चा देने का वादा किया। लेकिन, प्रभु ने उन्हें तुरंत एक बच्चे के साथ आशीर्वाद नहीं दिया। उनके जीवन में प्रभु का वादा पूरा होने से पहले उन्हें कई वर्षों तक इंतजार करना पड़ा। लेकिन, अब्राहम की पत्नी सारा ने इस वादे को पूरा करने के लिए एक छोटा रास्ता सोचा। वह अपनी नौकरानी हगर को अब्राहम के पास ले आई और उसे अपनी पत्नी के रूप में लेने के लिए कहा और उसके माध्यम से एक बच्चा पैदा किया। हाजिरा ने अब्राहम को एक बेटा दिया जिसका नाम इस्माइल था'। इसके माध्यम से एक नई पीढ़ी की शुरुआत हुई। लेकिन फिर भी सारा के माध्यम से इब्राहीम के लिए एक बच्चे का वादा प्रभु की ओर सच्चा से था ''कि तुम्हे सारा के माध्यम से एक बच्चा होगा और इस जाति से कई राजा उठेंगे।'' उत्पत्ति 17: 15–16 ''15 फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा। 16 और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।'' हमें अपना भरोसा और विश्वास प्रभु में ही रखना चाहिए, वह हमारे परिवार की देखभाल करेंगे, वह हमारे बच्चों की भी देखभाल करेंगे। प्रभु हम में से दिए हर एक को अपना हर वादा पूरा करते है। हमारा प्रभु कभी नहीं बदलता है, यह हम है जो इस बात का आग्रह करते हैं कि प्रभु का वादा हमारे जीवन में पूरा हो। सारा की तरह, हमारे पास प्रभु के वचन पर प्रतीक्षा करने का धैर्य नहीं है। प्रभु हमारे परिवार और बच्चों के लिए अधिक चिंतित हैं और इस प्रकार वह उनकी देखभाल करेंगे। जैसे यहोशू ने कहा, ''मैं और मेरा घराना, हम अपने प्रभु की ही सेवा करेंगे''। आइए हम पढ़ते हैं यहोशू 24: 15 ''और यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूंगा।'' तब हमारा घर वैसा ही होगा जैसा हम भजन संहिता 128: 3 ''तेरे घर के भीतर तेरी स्त्री फलवन्त दाखलता सी होगी; तेरी मेज के चारों ओर तेरे बालक जलपाई के पौधे से होंगे।'' जब हम केवल प्रभु परमेश्वर की आराधना करते हैं, तो यह 'वह' 'है जो हमारे लिए लड़ेंगे और बुराई से हमारी हर लड़ाई जीतेंगे। इसलिए, हमें सारा की तरह अपने जीवन में कभी भी सरल उपाय नहीं ढूंढ़ना चाहिए। हमें अपने प्रभु परमेश्वर से प्यार करना चाहिए और अपने विश्वास और भरोसे को उनपर अकेले रखना चाहिए। फिर, प्रभु हमारे परिवार और बच्चों की देखभाल करेंगे। हम में से बहुत से लोग अपनी बुद्धि और ज्ञान के साथ अपनी समस्याओं को स्वयं हल करने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने से हम प्रभु

की दृढ़ इच्छाशक्ति और योजना में बाधा लाते हैं। शुरवात के समय से, परमेश्वर ने इस्राएलियों से बात की थी और उनसे कहा था कि ''चुप रहो, तुम्हारी लड़ाई मेरी है, मैं तुम्हारे लिए लडूंगा''। आज भी, शत्रु हमारी कमजोरी को जानता है, वह जानता है कि हमारी कमजोरी कौन है। उनके माध्यम से वह हमें चोट पहुँचाएगा, इस प्रकार शत्रु हमें परेशान करेगा। हमें छोटे रास्ते से इस सरल रास्ते की तलाश नहीं करनी चाहिए, बल्कि हमें प्रभु के समय का इंतजार करना चाहिए। हमारा प्रभु नहीं बदलता है, जब वह कहते है ''वह करेंगे, हमें विश्वास करना चाहिए कि वह निश्चित रूप से करेंगे। उनका एक वचन हमारे जीवन में एक हजार बार के बराबर है।''

अब, आइए सुलैमान की प्रार्थना सुनें 1 राजा 9: 3 ''और यहोवा ने उस से कहा, जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिये रख कर उसे पवित्र किया है; और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे।''

दाऊद की प्रार्थना का उत्तर प्रभु ने दिया था। लेकिन, सुलैमान ने मंदिर में क्या प्रार्थना की:

– सुलैमान ने प्रार्थना की कि दुःख में प्रभु, तुम उनकी प्रार्थना सुनते हो।

– जो लोग आँसू में आते हैं, प्रभु आप उनके आँसू पोंछते हो।

– अन्यजातियों की मदद करते हैं, उनकी प्रार्थना भी सुनते हों और उनका जवाब भी देते हो।

– इस मंदिर में हर पापी की प्रार्थना सुनते हो।

– यदि वे बारिश के लिए प्रार्थना करते हैं, तो उन्हें बारिश प्रधान करें

– उन्होंने दर्द, दुःख और आँसू में आने वाले लोगों के लिए और अधिक प्रार्थना की

– उन्होंने अकाल और महामारी के समय प्रार्थना की, जो फसलों को नष्ट कर देता है।

परमेश्वर ने सुलैमान की प्रार्थना को सुना है 1 राजा 8: 22– 55 "22 ''22 तब सुलैमान इस्राएल की पूरी सभा के देखते यहोवा की वेदी के साम्हने खड़ा हुआ, और अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाकर कहा, हे यहोवा! 23 हे इस्राएल के परमेश्वर! तेरे समान न तो ऊपर स्वर्ग में, और न नीचे पृथ्वी पर कोई ईश्वर है: तेरे जो दास अपने सम्पूर्ण मन से अपने को तेरे सम्मुख जानकर चलते हैं, उनके लिये तू अपनी वाचा पूरी करता, और करुणा करता रहता है। 24 जो वचन तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था, उसका तू ने पालन किया है, जैसा तू ने अपने मुंह से कहा था, वैसा ही अपने हाथ से उसको पूरा किया है, जैसा आज है। 25 इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, कि तेरे कुल में, मेरे साम्हने

इस्राएल की गद्दी पर विराजने वाले सदैव बने रहेंगेः इतना हो कि जैसे तू स्वयं मुझे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चालचलन में ऐसी ही चौकसी करें। 26 इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर अपना जो वचन तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था उसे सच्चा सिद्ध कर। 27 क्या परमेश्वर सचमुच पृथ्वी पर वास करेगा, स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा। 28 तौभी हे मेरे परमेश्वर यहोवा! अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट की ओर कान लगाकर, मेरी चिल्लाहट और यह प्रार्थना सुन! जो मैं आज तेरे साम्हने कर रहा हूँ; 29 कि तेरी आंख इस भवन की ओर अर्थात इसी स्थान की ओर जिसके विषय तू ने कहा है, कि मेरा नाम वहां रहेगा, रात दिन खुली रहेंः और जो प्रार्थना तेरा दास इस स्थान की ओर करे, उसे तू सुन ले। 30 और तू अपने दास, और अपनी प्रजा इस्राएल की प्रार्थना जिस को वे इस स्थान की ओर गिड़गिड़ा के करें उसे सुनना, वरन स्वर्ग में से जो तेरा निवासस्थान है सुन लेना, और सुनकर क्षमा करना। 31 जब कोई किसी दूसरे का अपराध करे, और उसको शपथ खिलाई जाए, और वह आकर इस भवन में तेरी वेदी के साम्हने शपथ खाए, 32 तब तू स्वर्ग में सुन कर, अर्थात अपने दासों का न्याय करके दुष्ट को दुष्ट ठहरा और उसकी चाल उसी के सिर लौटा दे, और निर्दोष को निर्दोष ठहराकर, उसके धर्म के अनुसार उसको फल देना। 33 फिर जब तेरी प्रजा इस्राएल तेरे विरुद्ध पाप करने के कारण अपने शत्रुओं से हार जाए, और तेरी ओर फिर कर तेरा नाम ले और इस भवन में तुझ से गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करे, 34 तब तू स्वर्ग में से सुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का पाप क्षमा करनाः और उन्हें इस देश में लौटा ले आना, जो तू ने उनके पुरुखाओं को दिया था। 35 जब वे तेरे विरुद्ध पाप करें, और इस कारण आकाश बन्द हो जाए, कि वर्षा न होए, ऐसे समय यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करके तेरे नाम को मानें जब तू उन्हें दुःख देता है, और अपने पाप से फिरें, तो तू स्वर्ग में से सुनकर क्षमा करना, 36 और अपने दासों, अपनी प्रजा इस्राएल के पाप को क्षमा करना; तू जो उन को वह भला मार्ग दिखाता है, जिस पर उन्हें चलना चाहिये, इसलिये अपने इस देश पर, जो तू ने अपनी प्रजा का भाग कर दिया है, पानी बरसा देना। 37 जब इस देश में काल वा मरी वा झुलस हो वा गेरुई वा टिड्डियां वा कीड़े लगें वा उनके शत्रु उनके देश के फाटकों में उन्हें घेर रखें, अथवा कोई विपत्ति वा रोग क्यों न हों, 38 तब यदि कोई मनुष्य या तेरी प्रजा इस्राएल अपने अपने मन का दुःख जान लें, और गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करके अपने हाथ इस भवन की ओर फैलाएं; 39 तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुनकर क्षमा करना, और ऐसा करना, कि एक एक के मन को जानकर उसकी समस्त चाल के अनुसार उसको फल देनाः तू ही तो सब आदमियों के मन के भेदों का जानने वाला है। 40 तब वे जितने दिन इस देश में रहें, जो तू ने उनके पुरखाओं को दिया था, उतने दिन तक तेरा भय मानते रहें। 41 फिर परदेशी भी जो तेरी प्रजा इस्राएल का न हो, जब वह तेरा नाम सुनकर, दूर देश से आए, 42 वह तो तेरे बड़े नाम और बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा

का समाचार पाए; इसलिये जब ऐसा कोई आकर इस भवन की ओर प्रार्थना करें, 43 तब तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुन, और जिस बात के लिये ऐसा परदेशी तुझे पुकारे, उसी के अनुसार व्यवहार करना जिस से पृथ्वी के सब देशों के लोग तेरा नाम जानकर तेरी प्रजा इस्राएल की नाईं तेरा भय मानें, और निश्चय जानें, कि यह भवन जिसे मैं ने बनाया है, वह तेरा ही कहलाता है। 44 जब तेरी प्रजा के लोग जहां कहीं तू उन्हें भेजे, वहां अपने शत्रुओं से लड़ाई करने को निकल जाएं, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम पर बनाया है, यहोवा से प्रार्थना करें, 45 तब तू स्वर्ग में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर उनका न्याय कर। 46 निष्पाप तो कोई मनुष्य नहीं है: यदि ये भी तेरे विरुद्ध पाप करें, और तू उन पर कोप करके उन्हें शत्रओं के हाथ कर दे, और वे उन को बन्धुआ करके अपने देश को चाहे वह दूर हो, चाहे निकट ले जाएं, 47 तो यदि वे बन्धुआई के देश में सोच विचार करें, और फिर कर अपने बन्धुआ करने वालों के देश में तुझ से गिड़गिड़ाकर कहें कि हम ने पाप किया, और कुटिलता ओर दुष्टता की है; 48 और यदि वे अपने उन शत्रुओं के देश में जो उन्हें बन्धुआ करके ले गए हों, अपने सम्पूर्ण मन और सम्पूर्ण प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने इस देश की ओर जो तू ने उनके पुरुखाओं को दिया था, और इस नगर की ओर जिसे तू ने चुना है, और इस भवन की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम का बनाया है, तुझ से प्रार्थना करें, 49 तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से उनकी प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनना; और उनका न्याय करना, 50 और जो पाप तेरी प्रजा के लोग तेरे विरुद्ध करेंगे, और जितने अपराध वे तेरे विरुद्ध करेंगे, सब को क्षमा करके, उनके बन्धुआ करने वालों के मन में ऐसी दया उपजाना कि वे उन पर दया करें। 51 क्योंकि वे तो तेरी प्रजा और तेरा निज भाग हैं जिन्हें तू लोहे के भट्ठे के मध्य में से अर्थात मिस्र से निकाल लाया है। 52 इसलिये तेरी आंखें तेरे दास की गिड़गिड़ाहट और तेरी प्रजा इस्राएल की गिड़गिड़ाहट की ओर ऐसी खुली रहें, कि जब जब वे तुझे पुकारें, तब तब तू उनकी सुन ले; 53 क्योंकि हे प्रभु यहोवा अपने उस वचन के अनुसार, जो तू ने हमारे पुरखाओं को मिस्र से निकालने के समय अपने दास मूसा के द्वारा दिया था, तू ने इन लोगों को अपना निज भाग होने के लिये पृथ्वी की सब जातियों से अलग किया है। 54 जब सुलैमान यहोवा से यह सब प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ कर चुका, तब वह जो घुटने टेके और आकाश की ओर हाथ फैलाए हुए था, सो यहोवा की वेदी के साम्हने से उठा, 55 और खड़ा हो, समस्त इस्राएली सभा को ऊंचे स्वर से यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि धन्य है यहोवा।''
इस प्रकार परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, कि मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और इसका उत्तर दूंगा, 1 राजा 9: 3 ''3 और यहोवा ने उस से कहा, जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिये रख कर उसे पवित्र किया है; और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे।''

इस प्रकार, सुलैमान से किया गया हर वादा, परमेश्वर ने पूरा किया। कई सालों बाद, बाबुल शहर में कब्जा किए गए दानिय्येल ने इस सुलैमान के मंदिर को देखा और उसके विपत्ति के समय में प्रार्थना की। बाबुल शहर में, राजा ने एक फरमान पारित किया था, कि कोई भी अपने प्रभु से प्रार्थना नहीं करेगा। लेकिन दानिय्येल को प्रभु ने सुलैमान से किया हुआ वादा याद आया और यह भी याद किया कि कैसे परमेश्वर ने सुलैमान की प्रार्थनाओं का जवाब दिया। प्रमाण पत्र के बावजूद, दानिय्येल ने हमारे सर्वशक्तिमान प्रभु आराधना करना और प्रार्थना करना जारी रखा, जिसमें खिड़कियां खुली थीं और सुलैमान के मंदिर की ओर देखते हुए, दानिय्येल दिन मैं तीन बार प्रार्थना करता था। दानिय्येल जानता था कि लोग बदलेंगे, हालात बदलेंगे लेकिन हमारा प्रभु कभी नहीं बदलेगा। इस प्रकार, दानिय्येल ने सुलैमान के मंदिर की ओर देखा और राजा के फरमान के डर के बिना प्रार्थना की। प्रभु ने दानिय्येल की प्रार्थना का जवाब दिया। इसी तरह हमारा मंदिर भी एक चुना हुआ मंदिर है। कई लोग आए और गए। लेकिन जैसा कि परमेश्वर ने कहा था, मेरी नज़र इस पवित्र मंदिर पर होगी और मेरे कान यहाँ की हर प्रार्थना के लिए खुले होंगे। हमें विश्वास करना चाहिए कि यह आज भी सच है। जैसा कि दानिय्येल सुलैमान के मंदिर में की गई प्रार्थना में विश्वास करता था। हमारे जीवन में आज भी इस वादे को याद रखना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। कई लोगों ने इस जगह को छोड़ दिया है, कुछ हैं और कुछ इस धरती पर आज भी जीवित नहीं हो सकते हैं। फिर भी हमारा परमेश्वर एक न बदलनेवाला परमेश्वर है। यह पवित्र मंदिर प्रभु का चुना हुआ स्थान है, यहाँ जो कुछ भी होता है वह प्रभु की इच्छा और योजना के अनुसार ही होता है। जब हम भी यहाँ प्रार्थना करते हैं, जैसा कि दानिय्येल ने सुलैमान की ओर देखा और प्रार्थना की, प्रभु निश्चित रूप से सुनेंगे और जवाब देंगे और हमारे जीवन में शक्तिशाली चीजें करेंगे। दानिय्येल 6: 11– 23 ''11 तब उन पुरूषों ने उतावली से आकर दानिय्येल को अपने परमेश्वर के सामने बिनती करते और गिड़गिड़ाते हुए पाया। 12 सो वे राजा के पास जाकर, उसकी राजआज्ञा के विषय में उस से कहने लगे, हे राजा, क्या तू ने ऐसे आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया कि तीस दिन तक जो कोई तुझे छोड़ किसी मनुष्य या देवता से बिनती करेगा, वह सिंहों की मान्द में डाल दिया जाएगा? राजा ने उत्तर दिया, हां, मादियों और फारसियों की अटल व्यवस्था के अनुसार यह बात स्थिर है। 13 तब उन्होंने राजा से कहा, यहूदी बंधुओं में से जो दानिय्येल है, उसने, हे राजा, न तो तेरी ओर कुछ ध्यान दिया, और न तेरे हस्ताक्षर किए हुए आज्ञापत्र की ओर; वह दिन में तीन बार बिनती किया करता है। 14 यह वचन सुनकर, राजा बहुत उदास हुआ, और दानिय्येल के बचाने के उपाय सोचने लगा; और सूर्य के अस्त होने तक उसके बचाने का यत्न करता रहा। 15 तब वे पुरूष राजा के पास उतावली से आकर कहने लगे, हे राजा, यह जान रख, कि मादियों और फारसियों में यह व्यवस्था है कि जो जो निषेधाज्ञा या आज्ञा राजा ठहराए, वह नहीं बदल सकती। 16 तब राजा ने आज्ञा दी, और दानिय्येल लाकर सिंहों की मान्द में डाल दिया गया। उस समय राजा ने

दानिय्येल से कहा, तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, वही तुझे बचाए! 17 तब एक पत्थर लाकर उस गड़हे के मुंह पर रखा गया, और राजा ने उस पर अपनी अंगूठी से, और अपने प्रधानों की अंगूठियों से मुहर लगा दी कि दानिय्येल के विषय में कुछ बदलने ने पाए। 18 तब राजा अपने महल में चला गया, और उस रात को बिना भोजन पड़ा रहा; और उसके पास सुख विलास की कोई वस्तु नहीं पहुंचाई गई, और उसे नींद भी नहीं आई। 19 भोर को पौ फटते ही राजा उठा, और सिंहों के गड़हे की ओर फुर्ती से चला गया। 20 जब राजा गड़हे के निकट आया, तब शोक भरी वाणी से चिल्लाने लगा और दानिय्येल से कहा, हे दानिय्येल, हे जीवते परमेश्वर के दास, क्या तेरा परमेश्वर जिसकी तू नित्य उपासना करता है, तुझे सिंहों से बचा सका है? 21 तब दानिय्येल ने राजा से कहा, हे राजा, तू युगयुग जीवित रहे! 22 मेरे परमेश्वर ने अपना दूत भेज कर सिंहों के मुंह को ऐसा बन्द कर रखा कि उन्होंने मेरी कुछ भी हानि नहीं की; इसका कारण यह है, कि मैं उसके साम्हने निर्दोष पाया गया; और हे राजा, तेरे सम्मुख भी मैं ने कोई भूल नहीं की। 23 तब राजा ने बहुत आनन्दित होकर, दानिय्येल को गड़हे में से निकालने की आज्ञा दी। सो दानिय्येल गड़हे में से निकाला गया, और उस पर हानि का कोई चिन्ह न पाया गया, क्योंकि वह अपने परमेश्वर पर विश्वास रखता था।'' प्रमाण पत्र होने के बावजूद, दानिय्येल ने सुलैमान को किये हुए प्रभु के वादे को याद किया और वह प्रार्थना करते हुए सुलैमान के मंदिर की ओर देखता रहा। इस प्रकार शेर की मांद में होने के बावजूद, दानिय्येल को अपने शरीर पर खरोंच भी नहीं आई। दानिय्येल शेरों के साथ मांद में, मन की पूर्ण शांति में रहा, क्योंकि उसका विश्वास और भरोसा अकेले प्रभु पर था। ऐसा नहीं है कि प्रभु के बच्चों के जीवन में कोई दर्द, दुःख और परीक्षण नहीं है। बेशक बड़े परीक्षण, परीक्षा और बंधन हैं। हमारे जीवन को प्रभु के प्यार के लिए संघर्ष करना होगा। उस समय, शत्रु हमारे विश्वास को गंभीर परीक्षणों में डाल देगा। लेकिन हमें याद रखना चाहिए, ठीक उसी तरह जब दानिय्येल ने प्रार्थना की थी कि प्रभु शेरों का मुंह बंद कर दे और इस तरह दानिय्येल के शरीर पर एक खरोंच भी नहीं आई। हालाँकि कितना ही बड़ा बंधन यह शत्रु हम पर डाले, हमें तब भी अपने प्रभु पर विश्वास करना चाहिए जो की पराक्रमी है। आइए भजन संहिता पढ़ते हैं 23: 5 ''तू मेरे सताने वालों के सामने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।'' हमारे प्रभु हमारे दुश्मनों के सामने हमारे लिए एक मेज जरूर रखेंगे। जब हम अपने जीवन में परीक्षाओं और परीक्षणों में पड़ते हैं, तो इस पवित्र मंदिर और प्रभु में हमारी आस्था और विश्वास मजबूत होना चाहिए।

आज भी, परमेश्वर हमें उनके अभिषेक के द्वारा मजबूत करेंगे। आईये पढ़ते हैं निर्गमन 15: 26 ''कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा

हूं।'' हमारी दृष्टि में सब कुछ सही है, लेकिन हमें यह देखना चाहिए कि 'प्रभु की दृष्टी' में क्या सही है। सारा ने सोचा कि अब्राहम को अपनी पत्नी के रूप में अपनी नौकरानी हाजिरा को लेने के लिए कहना, और हाजिरा के माध्यम से बेटा पैदा करना सही है। लेकिन यह प्रभु की दृष्टि में सही नहीं था। इस प्रकार, हमें वह करना चाहिए जो 'प्रभु की दृष्टी' में सही है। हमें पवित्र शास्त्र में की कहानी जानते हैं कि एक युवा लड़का यीशु के पास आया था और जब यीशु ने उससे पूछा कि क्या उसने सभी आज्ञाओं और विधियों को रखा है, तो उसने जवाब दिया और कहा कि ''बचपन से ही मैं ये सब कर रहा हूं''। यीशु ने उसके कहे हुए शब्दों के माध्यम से उसका परीक्षण किया, उसने युवा लड़के से कहा ''सब कुछ बेच दो और फिर मेरे पीछे हो ले''। इस बात पर लड़का बहुत निराश हुआ, वह बहुत दुखी हुआ और इस तरह वापस लौट गया। यह उसकी दृष्टि में सही था, लेकिन प्रभु की दृष्टि में नहीं। हमें यह याद रखना चाहिए कि प्रभु की दृष्टि में जो अच्छा है वह हमारी दृष्टि में अच्छा नहीं लगता है, और जो हमारी दृष्टि में अच्छा है वह प्रभु की दृष्टि में अच्छा नहीं है। हमें अपने जीवन में हमेशा प्रभु की इच्छा को पूरा करने के लिए प्रयास करना चाहिए और प्रभु की दृष्टि में सही होना चाहिए। जैसा कि वचन में वादा किया गया है कि हम पर कोई भी बीमारी न आएगी जो कि मिस्रियों पर आई थी, क्योंकि हमारा प्रभु ठीक करता है। आइए फिर से पढ़ें निर्गमन 15: 26 ''कि यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा का वचन तन मन से सुने, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करे, और उसकी आज्ञाओं पर कान लगाए, और उसकी सब विधियों को माने, तो जितने रोग मैं ने मिस्रियों पर भेजा है उन में से एक भी तुझ पर न भेजूंगा; क्योंकि मैं तुम्हारा चंगा करने वाला यहोवा हूं।'' जब हम उनके पवित्र मंदिर में प्रभु के सामने आते हैं जहां प्रभु ने बात की है, तो हमें विश्वास करना चाहिए कि हम इस मंदिर में जो भी प्रार्थना करते हैं, प्रभु हमारी सुनेंगे और जवाब देंगे और हर बीमारी को चंगा करेंगे। इस प्रकार हमें प्रभु की वाणी के प्रति सचेत रहना चाहिए और उनके आज्ञा और विधियों में चलना चाहिए और उनकी इच्छा हमारे जीवन में पूरी करना चाहिए, तब कोई भी मिस्रियों की बीमारी हमारे ऊपर नहीं आएगी। हम जानते हैं कि अब्राहम, दानिय्येल, सुलैमान, यिर्मयाह यह सभी अपने हृदयों से आज्ञाकारी थे। क्योंकि वे सच्चाई जानते थे और वे हमेशा प्रभु के प्रति वफादार थे। प्रभु ने हमेशा उनकी प्रार्थना सुनी और समय–समय पर अपने स्वर्गदूतों को भेजा और उन्हें उनके सभी दर्द और दुखों से मुक्त किया। दाऊद पूरी तरह से बिखर चूका था और टूट चूका था, फिर भी जब उसने प्रार्थना की तो प्रभु ने उनके समय में जवाब दिया, और इस तरह दुश्मनों द्वारा दूर ले जाया हुआ सब कुछ वापस लाया गया। यह संभव है, क्योंकि दाऊद प्रभु पर और प्रभु के समय के लिए इंतजार कर रहा था।

हमारे जीवन में भी, हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारा प्रभु दयालु है और उसकी दया हमारे जीवन में है। भजन संहिता 91: 15–16 ''15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त

करूंगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा।'' हमें प्रभु की आवाज़ सुननी चाहिए और यह जानना चाहिए कि वह वही प्रभु है जिसने दानिय्येल और सुलैमान की प्रार्थना का जवाब दिया था। प्रभु के लिए हमारी प्रार्थना सुनने के लिए सबसे पहले हमें उनकी दृष्टि में विनम्र होना चाहिए और साथ ही हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जो उन्हें नाराज करे। हमारे परेशानी के समय के दौरान जब हम उसे पुकारते हैं, तो वह हमें सुनेगा और जवाब देगा। फिलिप्पियों 4: 6 ''किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख अपस्थित किए जाएं।'' हर चीज में हमें अपनी चिंताओं को प्रभु से याचना और प्रार्थना के साथ लाना चाहिए। लेकिन हम कमजोर इंसान हैं, हम इसके ठीक विपरीत करते हैं। हम लगातार जो कुछ नहीं है उसके बारे में चिंता करते हैं और अकेले अपने स्वयं के लिए और अधिक समस्याएं पैदा करते हैं। हम, इस प्रकार प्रभु के नज़रों में गिर जाते हैं और मिस्रियों की बीमारी हमारा साथ नहीं छोड़ती है। यहाँ इस वचन में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है, बिना किसी चिंता के उत्सुक रहें, प्रार्थना और याचना के द्वारा हर बात में, धन्यवाद के साथ अपने निवेदन को प्रभु के सामने रखें। प्रभु हमसे प्रार्थना में हमारे समक्ष अपनी सारी उत्सुकता को रखने के लिए कहते हैं। प्रभु हमारे लिए मार्ग तैयार करेंगे। प्रभु हमारे जीवन में असंभव – को संभव में बदल देंगे, हमारे विचारों से परे, वह उन तरीकों से काम कर सकते है जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हम कैसे खुश रह सकते हैं, हम शांति कैसे पा सकते हैं, हम अपनी समस्याओं से कैसे जीत सकते हैं? जिस क्षण हम खुद को शत्रु के हाथों में दे देंगे, हमारा जीवन एक बेकार का जीवन बन जाता है। इस प्रकार नबी एलिय्याह ने भी कहा, एक रास्ता चुनो और उसमें दृढ़ बने रहो, इसके बारे में अस्थिर और डगमगाते मत रहो। जिस तरह शत्रु हमारी आत्मा को पकड़ने की कोशिश करता है, उसी तरह हमारे प्रभु भी हमें दुश्मन से दूर रखने के लिए लड़ने की कोशिश करते हैं और हमारी आत्मा को ढीला नहीं छोड़ते है। इस प्रकार, हमारा प्रभु हमें कहते है ''उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।'', आइए हमपढ़ें यशायाह 60: 1–2 ''1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।'' हमें पहले उठना चाहिए और फिर प्रभु के प्रकाश को हम पर चमकने देना चाहिए। अंत समय के दौरान, इस पृथ्वी पर अंधकार होगा और जो लोग सच्चाई जानते हैं, प्रभु की रोशनी उन पर चमकेगी और वे बच जाएंगे। जिस प्रकार, यहोशू, सुलैमान, दानिय्येल उन सभी ने दुनिया को पीछे छोड़ने और प्रभु परमेश्वर के पीछे चलने का निर्णय लिया, इसलिए हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। हमें हर चीज में प्रभु को अपने सामने रखना चाहिए, प्रभु के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।

सुलैमान एक दृष्टांत में बोलता है, सभोपदेशक 9: 14–15 ''14 एक छोटा सा नगर था, जिस में थोड़े ही लोग थे; और किसी बड़े राजा ने उस पर चढ़ाई कर के उसे घेर लिया, और उसके विरुद्ध बड़े बड़े धुस बनवाए। 15 परन्तु उस में एक दरिद्र बुद्धिमान पुरूष पाया गया, और उसने उस नगर को अपनी बुद्धि के द्वारा बचाया। तौभी किसी ने उस दरिद्र का स्मरण न रखा।''यहाँ हम प्रभु के प्रेम को देखते हैं, शत्रु लोगों को बंधन में डालने और उनकी आत्माओं को नष्ट करने के लिए आता है। लेकिन यह वचन कहता है, कि राजा के पतन को लाने के लिए, एक गरीब बुद्धिमान व्यक्ति उन लोगों को बचाने के लिए आया यानी यीशु मसीह। वह एक बढ़ई के परिवार में पैदा हुए थे और एक गरीब आदमी के घर में बड़े हुए और अपने चुने हुए बच्चों के लिए कलवारी के क्रूस पर अपने जीवन का बलिदान करने के लिए चुने गए थे। वह गेथसमेन के बगीचे में पीड़ित हुए, जहाँ उनका पसीना लहू की बूंदों में बदल गया और इस तरह उसने हमारे लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। हम हमेशा अपने समाज, परिवार और दूसरों के बारे में चिंतित रहते हैं, इस प्रकार हम अपने जीवन में गहरे बंधन में चले जाते हैं। लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह इस दुनिया में एक बढ़ई के बेटे के रूप में पैदा हुए थे। पैदा होने के लिए कोई जगह नहीं थी और जानवरों के बीच एक चरनी में पैदा हुआ था। इसलिए, वह एक गरीब बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आये, जो इस दुनिया के राजा यानी शत्रु को हराने के लिए आये थे। हम उनके किए गए उनके हर बलिदान को भूल जाते हैं। हमें हमेशा उनके वचनों को अपने दिलों में रखना चाहिए और अपने जीवन में अकेले उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। इस प्रकार, जब हम ऐसा करते हैं, तो परमेश्वर वादा करते है कि मिस्र की कोई भी बीमारी हम पर नहीं आएगी। याद रखें की दुनिया आज अंधकार में है, लेकिन हम उनके बच्चे हैं और उनकी रोशनी हम पर चमक रही है। इस प्रकार, हमारी प्रार्थना दानिय्येल की प्रार्थना की तरह होनी चाहिए। यदि नहीं, तो दुनिया का अंधेरा हमें भी बुरी तरह जकड़ लेगा।

हमें वचन के लिए प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए, बहुत से लोगों को 'सच्चा वचन' नहीं मिलता है जैसे हमें अपने कलीसिया में मिलता हैं। इस प्रकार जब हम उनके वचन को सुनते हैं और उनका वचन पालन करते हैं, तो परमेश्वर हमारे लिए हमारे शत्रुओं के सामने मेज बिछाते है। यह संदेश उन सभी को आशीर्वाद दें जो इसे पढ़ते हैं! प्रभु की स्तुति हो !